राजपूतों के अधीन समाज

राजपूत युगीन समाज कैसा है, इसे हम निम्न बिंदुओं के अंतर्गत समझ सकते हैं

धर्म

राजपूत हिंदू धर्म के कट्टर अनुयायी थे।

उन्होंने बौद्ध धर्म और जैन धर्म को भी संरक्षण दिया।

इनके काल में भक्ति पंथ का प्रारम्भ हुआ।

सरकार

राजपूत समाज अपनी संगठनात्मक संरचना में सामंती था।

प्रत्येक राज्य जागीरदारों के पास मौजूद बड़ी संख्या में जागीरों में विभाजित था।

इस काल की प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ

कल्हण की राजतरंगिनी - 'राजाओं की नदी'

जयदेव का गीत गोविंद - चरवाहे का गीत

सोमदेव की कथासरित्सागर

पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि चंद बरदाई ने पृथ्वीराज रासो लिखा जिसमें उन्होंने पृथ्वीराज चौहान के सैन्य कारनामों का उल्लेख किया है।

भास्कराचार्य ने खगोल विज्ञान पर एक पुस्तक सिद्धांत शिरोमणि लिखी।

राजशेखर - महेंद्रपाल और महीपाल के दरबारी कवि। उनकी सबसे प्रसिद्ध

रचनाएँ कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा और बालरामायण थीं।

कला और वास्तुकला

भित्ति चित्र और लघु चित्र लोकप्रिय थे।

खजुराहो के मंदिर

भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर

कोणार्क का सूर्य मंदिर

माउंट आबू में दिलवाड़ा मंदिर

राजपूतों की सीमाएँ

राजपूत समाज अपनी संगठनात्मक संरचना में सामंती था । यह विभिन्न कुलों और राज्यों में विभाजित था । प्रत्येक राज्य पर एक या अधिक वंशानुगत शासक घरानों का शासन था।

वे एक-दूसरे से लड़े और इस प्रक्रिया में खुद को थका दिया । इसके अलावा, उनमें राजनीतिक दृष्टि और दूरदर्शिता का अभाव था और उन्होंने राष्ट्रीय चेतना की कमी प्रदर्शित की । उन्होंने राजनीतिक एकता की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्राथमिकता दी। भूमि के लिए कोई लिखित कानून नहीं था और अधिकांश राजपूत राज्यों का शासन स्थानीय रीति-रिवाजों और परंपरा के आधार पर किया जाता था।

इसके अलावा, राजपूत अनुकरणीय साहस और वीरता के लिए जाने जाते थे । वे ईमानदार, उदार और मेहमाननवाज़ थे और अपनी बात रखते थे । उन्होंने अपने अहंकार को किसी भी चीज़ से ऊपर रखा और युद्ध में छल और विश्वासघात के सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया। ये सिद्धांत तब काम करते थे जब वे एक-दूसरे से लड़ते थे लेकिन जब कट्टर मुस्लिम आक्रमणकारियों से

लड़ते थे तो ये सिद्धांत कोई मायने नहीं रखते थे।

इस काल में विकसित हुई परेशान करने वाली विशेषताओं में से एक जाति व्यवस्था की कठोरता और कई उपजातियों का गठन था । ब्राह्मणों और क्षत्रियों को समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त रहा। इसका एक प्रमुख निहितार्थ यह था कि जनता शासक वर्गों से जुड़ने में असमर्थ थी।

उपरोक्त सभी कारणों से मुस्लिम आक्रमणकारियों के लिए काम आसान हो गया और जब उन्होंने भारत पर आक्रमण किया तो भारतीय समाज आंतरिक कमजोरी के कारण ढह गया।